"पंकज मित्र की कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति : एक विश्लेषण"

राँची विश्वविद्यालय, राँची
के अंतर्गत पी.एच.डी (हिंदी)
उपाधि हेतु शोध प्रबंध की रूपरेखा
सन् 2024

हिंदी विभाग, कला संकाय

शोध निर्देशक	शोधार्थी
डॉ .कुमारी उर्वशी	प्रज्ञा
असिस्टेंट प्रोफेसर	
हिंदी विभाग	
राँची विमेंस कॉलेज	

पंकज मित्र की कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति : एक विश्लेषण

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही कहानी सुनने-सुनाने का प्रचलन रहा है। लोक और शिष्ट दोनों रूपों में कहानी का सम्बन्ध वाचिक परम्परा से अधिक निकट है।मानव सभ्यता के विकास के साथ ही कहानी सुनने-सुनाने का प्रचलन रहा है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में लिखा है "जिस प्रकार गीत गाना और सुनना मनुष्य के स्वभाव के अंतर्गत है उसी प्रकार कथा, कहानी कहना और सुनना भी। कहानियों का चलन सभ्य असभ्य सब जातियों में चला आ रहा है।"

जब हम शताब्दियों के मुहाने पर खड़े होकर समय को देखते हैं, तो हमें इस बात का ख्याल रखना ही होगा कि साहित्य की अनेक विधाओं में कथा साहित्य (कहानी) की अपनी एक अलग प्रसिद्धि है, जो मुझे काफी प्रभावित करते है। बदलते परिवेश में मनुष्य की जीवन पद्धति बदलती जा रही है। इसका प्रतिबिंब कथा साहित्य में देखने को मिलता है। अन्य विधाओं के अपेक्षा कथा साहित्य में समाज में होने वाले परिवर्तनों से उपजी विसंगतियों और विडंबनाओं को ज्यादा स्पष्ट रुप से अभिव्यक्त किया जाता है हिंदी कथा साहित्य अपने जन्म काल से ही सामाजिक गतिविधियों को अपना विषय बनाती रही है। पंकज मित्र समकालीन कथा साहित्य के सशक्त और छोटे कस्बे के बड़े लोकनायक है। उनके कथा साहित्य को पढ़ते हुए मुझे महसूस हुआ है कि वर्तमान समय में आम लोग उपभोक्तावाद के कारण परिवार से बाज़ार तक रिश्तों के बदलते समीकरणों पर लेखक ने ध्यान केंद्रित किया है। शहर और गाँव के बीच कस्बा अपनी संपूर्ण हलचलों के साथ उपस्थित हुआ है। आधुनिक युग में बाजारवाद के संवेदनहीन विस्तार से मानवता की हत्या की मीमांसा ,पानी प्रबंधन की विडंबनाओं, पूँजी से पैदा हुई सपनों में कर्ज की दशहत ,

निजीकरण की समस्याएं ,नई तकनीक से टकराकर टूटती नैतिकता, शोषण व्यवस्था, वर्तमान समय की शिक्षा समस्या आदि यथार्थ की स्थिति दिखाया गया है ।इस तरह पंकज मित्र ने भूमंडलोत्तर बाजार के भारतीय परिवेश पर होने वाले प्रभाव को रेखांकित किया है तथा कथा साहित्य में उपभोक्तातवादी संस्कृति की यथार्थवाद वर्णन चित्रण और चिंतन पंकज मित्र अपनी कहानियों में करते है ।

पंकज मित्र समकालीन कहानीकारों में अग्रणी माने जाते है। समकालीन दौर की कहानियाँ अपने समय और समाज का चित्रण करने के साथ साथ उस पर टिप्पणी करती हुई दिखाई देती है। इसी दौर में पंकज मित्र अपने कथा साहित्य के माध्यम से ऐसे समाज व वर्ग को दिखाते है जो उपभोक्तावाद, लपंट पूँजीवाद और रिश्तों के बदलते समीकरणों को अपने कहानियों के माध्यम दिखाया है।उपभोक्ता का तात्पर्य बाजार की चकाचौंध ,बड़े-बड़े मॉल मल्टीप्लेक्स आकर्षण ,किस्तों के बदलते समीकरणों को अपनी कहानियों में करते है उपभोक्तावाद का संबध व्यक्ति की कृत्रिम इच्छाओं से है,जो बाजार द्वारा पैदा की जाती है,आवश्यकता न होते हुए भी वस्तु को खरीदने के लिए विवश होना उपभोक्तावादी संस्कृति और बाजार का लक्षण है।

पंकज मित्र ने कथाकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई है। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्न है 'क्विज मास्टर',' हुडुकलुल्लु' ,'जिद्दी रेडियो', 'बाशिंदा @ तीसरी दुनिया', 'अच्छा आदमी','एक हंसोड़ का हलकनामा' । पंकज मित्र अपनी कहानियों में शहर या गाँव के समस्या को नही बल्कि देश विदेश के समस्याओं को कस्बे के माध्यम से दिखाने का प्रयास करते हैं। इनकी कहानियाँ किसान, मजदूर, आदिवासी,स्त्री, दलित, पर्यावरण,योग और पानी की समस्या, आदि से जुड़े समाज के विद्रूप चेहरे को हमारे समाने रखती है। इनकी कहानियां यथार्थ से मुठभेड़ करती हैं और यथार्थ समय की परिदृश्य हमारे सामने उजागर हो जाता है

‘क्विजमास्टर’ कहानी में कस्बे का यथार्थ चाहे वो रिश्ते यथार्थ हो या शिक्षा जैसा सामाजिक सेवा का कार्य , संवेदनहत्या की मीमांसा सब कुछ को उपभोक्ता वस्तु के रूप में बाजर में बेचने का शास्त्र नई पूंजीवादी व्यवस्था ने गढ़ा है। जिससे आज शिक्षा को व्यवसाय का नया रूप दिया जा रहा है।

‘जिद्दी रेडियो’ कहानी में भारतीय ग्रामीण एवं कस्बाई जीवन में हुए परिवर्तित सामाजिक परिवर्तनों और सांस्कृतिक परिवर्तन को दर्शाया गया है, जहाँ स्वप्नबाबू और घोष दा, सामंती व्यवस्था के अंग रहे है।वहीं बाबू बाजारवादी व्यवस्था के पुर्जे के रूप में अपने ही लोगों का विरोध करता है।

‘अच्छा आदमी’ कहानी में बाजार को विस्तार के लिए हर दिन और जगह एवं जमीन चाहिए, इसके लिए वह हमें लालच देता है, हमारी अधूरी लालसाओं को उकसाता है ,हमें अपने पाले में लेने की कोशिश दिखाया गया है।

‘ एक हँसोड़ का हलफ़नामा' कहानी संग्रह में कोरोना महामारी ने हमारे समाज को गहरे और विविध रूपों में प्रभावित किया है। लोगों के रहन-सहन,स्वास्थ्य, रोटी -रोजगार से लेकर व्यवहार तक बदलाव को दिखाया गया है।

इस तरह पंकज मित्र अपने कहानियों के माध्यम बाजारबाद से उपजी पूंजीपति के द्वारा मध्यवर्ग के जीवन, निम्न वर्ग के संघर्ष, संवदेनहीन होती सभ्यता विद्रूपता एवं विडम्बना का खेल, से ग्रस्त चरित्र,आदिवासियों के" कला और संस्कृति के दमन, मनुष्य के मनुष्य पर से खत्म होते विश्वास को देखा जा सकता है।समाज में फैलती असहजता एवं उदासीनता के साथ-साथ व्यक्ति की बाजारवाद के प्रति छटपटाहट को आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में बड़ा यथार्थ चित्रण करते है।

कथा लेखन के लिए पंकज मित्र ने कहानी के शिल्प में नई तरह की शैली का प्रयोग किया है। आलोचकों ने जिसे 'जादुई यथार्थवाद का नाम दिया है। जादुई यथार्थवाद में देखा यह गया है कि यथार्थ को भ्रम और भ्रम को यथार्थ बनाने की कोशिश की जाती है। ऐसा देखा जाता है कि जो सच होता है दिखाई नहीं देता और जो दिखाई देता है वह सच नहीं होता। असल में यह किस्सागोई का एक तरीका है जिसमें शिल्प के जादुई तत्वों का इस्तेमाल किया जाता है। यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए स्वप्न, कल्पना, अति प्राकृतिक तत्व व मिथकों आदि का प्रयोग किया जाता है। इसलिये इसमें अलौकिकता के तत्त्वों का भी इस्तेमाल किया जाता है।

पंकज मित्र अपनी कहानियों के माध्यम से अपने समय और समाज के यथार्थ जीवन के सत्य को प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में कस्बा वर्ग को केंद्र में रखकर जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। जैसा समाज दिखाई देता है ,वैसी ही उनकी रचनाओं का आधार है। समाज व जीवन की सच्चाई, मनुष्य के संघर्ष, स्त्री की दयनीय स्थिति, बदलते समाज, व्यवस्थागत विसंगतियों, सामाजिक स्थिति का कहानियों में अवलोकन किया गया है।

अतः पंकज मित्र की कहानियों के माध्यम से हम समाज की स्थिति देख सकते हैं तथा उनकी समग्र कहानियों के माध्यम से हम व्यवस्थित रूप से इस स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं साथ ही बाकी अलग-अलग दृष्टिकोण से भी कहानियों की विषय वस्तु का मूल्यांकन कर सकते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो प्रस्तुत शोध विषय अपने लक्ष्य में महत्वपूर्ण व प्रासंगिक जान पड़ता है।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध पंकज मित्र आज के यथार्थ को गहरी समझ रखने वाले हमारे समय के बेहद सजग लेखक है उपभोक्तावाद के नये स्वरूप को कहानियों के माध्यम परिचित होते है। भूमंडलीकरण और उन्मुक्त पूंजीवाद के बाद परिवार से बाजार तक रिश्तों के बदलते रूप हमारे समाज, संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित

करते है। मनुष्य के जीवन, रहन- सहन,व्यवहार तक हर चीज पर असर पड़ा। पूंजी बाजारवाद के सैध्दांतिक हमले और उसके द्वारा विराट से लेकर सूक्ष्म स्तर पर की जा रही संवेदना की हत्या हुई। समाज में व्याप्त भौतिक सुख सुविधा के उपभोक्तावाद में हो रहे भारतीय यथार्थ और संस्कृति को राष्ट्रीय मुद्दों, विडम्बनाओं की समस्याओं को अपनी स्थानीय जमीन पर ले जाते है। इस दृष्टि से इस शोध का अपना विशिष्ट महत्व होगा।

शोध की परिकल्पना

पंकज मित्र अपनी कहानियों के माध्यम से भूमण्डलीकरण या उपभोक्तावाद संस्कृति का यथार्थ जैसे जटिल समस्या से अवगत कराने का कार्य किया है। उपभोक्ता जैसे छोटे से शब्द हमारे समाज और संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित करते हुए एक दानव की तरह सब कुछ निगलना चाहता है। उपभोक्तावाद का प्रभाव इतनी तेजी से फैला कि अमीर द्वारा गरीब राष्ट्र को तेजी से लुटा जा रहा है । इस प्रकार इस तरह की मंशा रखनेवाले उपभोक्ता वाद संस्कृति के यथार्थ को हम पंकज मित्र जैसे साहित्यकारों के कहानियों के माध्यम से जान सके है।

शोध का उद्देश्य

समकालीन दौर की कहानियों में भूमंडलोत्तर के बाद मनुष्य विचार, संस्कृति यथार्थ पहली व दूसरी पीढ़ी व परिवतनो के साथ साथ नयापन लिये हुए है ।ये कहानियां उपभोक्तावाद, बाजारवाद के प्रभाव से सामाजिकता, व्यक्तिगत, नैतिकता, मानवीय मूल्यों का एक सकारात्मक बदलाव लेकर आगे बढ़ी है। यह पाठकों को एक सकारात्मक व नवीन उर्जा प्रदान कर रही है। स्वाभिमान और आत्मसम्मान के साथ चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ने की विचारधारा ही

इन कहानियों का असीम ऊर्जा है। समकालीन कहानियां अलग दृष्टिकोण से लिखी गई है। इन कहानियों में समाज के यथार्थ रूप को तथा फैले अलगाव को बड़ी कुशलता व कलात्मकता के साथ दर्शाती है। शोध के माध्यम से उपभोक्तावाद की संस्कृति का यथार्थ के माध्यम से पंकज मित्र के कहानियों का स्वरूप, विश्लेषण व गहन अध्ययन विभिन्न विचारों से किया जाएगा, जो मेरे शोध कार्य की आवश्यकता, उपादेयता व सार्थकता को सिध्द करता है। इन कहानियों के पात्र के द्वारा सामाजिक, व्यक्तिगत, जातिगत, नैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों के परिवर्तन बखूबी दर्शाया जाएगा। इसका विश्लेषण करना शोधकार्य का उद्देश्य है।

शोध कार्य से संबंधित अन्य शोध कार्य

1 पंकज मित्र की कहानियों में समकालीन युगबोध
शोधार्थी - श्वेता कुमारी
निर्देशक- प्रज्ञा गुप्ता
वर्ष - 2023
विश्वविद्यालय - राँची विश्वविद्यालय

शोध कार्य की पध्दति

प्रस्तावित शोधकार्य हेतु शोधार्थी द्वारा पंकज मित्र के सम्रग साहित्य का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन किया जाएगा। शोध विषय की दृष्टि से समकालीन दौर के कहानियों में विविधता है ।समकालीन कहानियों में वर्णित उपभोक्तवाद के यथार्थ को प्रस्तुत कर शोधकार्य में विश्लेषित करने का प्रयास किया जाएगा। सामाजिक विकास में शोध सहायक होते हैं और जिज्ञासा की मूलप्रवृति का निराकरण करते है इसलिए हिंदी के विद्वानों के साथ परिचर्चा के द्वारा विचारधारा को विकसित करने का प्रयास करूँगी I(Developing the ideas through

Discussion) संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के लिए शोधपत्र, आलेख, पत्रिकाएँ, समाचारपत्र, इंटरनेट, प्रश्नावली के द्वारा शोधसामग्री संकलित करने का मानस है। अनुसंधान की आवश्यकता के अनुकूल शोध कार्य की अन्य पद्धतियों का उपयोग किया जाएगा।

शोधकार्य की रूपरेखा

पंकज मित्र की कहानियों में उपभोक्तावाद संस्कृति ; एक विश्लेषण

प्रथम अध्याय : पंकज मित्र जीवनवृत्त एवं कृतित्व परिचय

1.1 पकंज मित्र का जन्म एवं शिक्षा

1.2. पंकज मित्र का कृतित्व परिचय

1.3 पुरस्कार एवं सम्मान

दूसरा अध्याय: हिन्दी कहानी एवं उपभोक्तावाद संस्कृति

2.1 उपभोक्तावाद का अर्थ एवं स्वरूप

2.2. भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति का उदय और विस्तार

2.3. उपभोक्तावादी संस्कृति के मूल्य दर्शन

तीसरा अध्याय: पकंज मित्र के कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति : एक विश्लेषण

3.1 पंकज मित्र की कहानियों में व्यक्त समाज

3.2 पकंज मित्र के कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति का स्वरूप

3.3. पंकज मित्र के कहानियों में बाजारवाद और समाज

चतुर्थ अध्याय : पकंज मित्र के समकालीन कहानीकारों के कहानियों में उपभोक्तावाद संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 समकालीन प्रमुख कहानीकार

4.2 कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति का स्वरूप

4.3. पंकज मित्र की कहानी और समकालीन कहानियों में उपभोक्तावाद संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन

पाँचवाँ अध्याय : पंकज मित्र के कहानियों की भाषा एवं शिल्प

5:1 पकंज मित्र के कहानियों की भाषा-शैली

5.2.पंकज मित्र के समकालीन कहानियों की भाषा शैली

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1 पंकज मित्र , क्विजमास्टर सौर अन्य कहानियाँ ,आधार प्रकाशन, 2011

2 पंकज मित्र, हुकुललुल्लू, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, 2008

3 पंकज मित्र, वांशिदा@ तीसरी दुनिया ,राजकमल प्रकाशन, 2008

4 पंकज मित्र, जिद्दी रेडियो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019

5 पंकज मित्र,अच्छा आदमी, राजकमल प्रकाशन

6 पंकज मित्र, एक हँसोड का हलफनामा, सेतुबंध प्रकाशन

सहायक ग्रंथ

1 हिंदी कहानी का विकास मधुरेश - लोकभारती प्रकाशन,पहला संस्करण 2018

2 जादुई यथार्थवाद और समकालीन हिंदी कथा साहित्य चित्रा - मेधा प्रकाशन - पहला संस्करण 2017

3. यथार्थवाद - शिव कुमार मिश्र - ताणी प्रकाशन

4. संरकरण 2011 24- किस्सागो पंकज मित्र - मृत्युंजय पाण्डेय,प्रलेक प्रकाशन - संस्करण 2023

5 . राकेश बिहारी, केंद्र में कहानी, शिल्पायन प्रकाशन दिल्ली 2013

6 डॉ, शिवशरण कौशिक, तृषित उपभोक्ता और पोषित बाजार अक्सर

7 शंभूनाथ, संस्कृति की उत्तरकथा

8 सच्चिदानंद सिन्हा, भूमंडलीकरण की चुनौतियां

9 अभय कुमार दुबे , भारत का भूमंडलीकरण

10 सच्चिदानंद सिन्हा, भारत और उपभोक्तावाद संस्कृति

11 डॉ प्रवीण कुमार -राजकुमार-चौधरी ज्योति , बाजार इतिहास और संस्कृति

12 अमित कुमार सिंह, भूमंडलीकरण और भारत परिदृश्य और विकल्प, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली 2009

13 प्रभा खेतान भूमंडलीकरण ; ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र ;सामयिक प्रकाशन; नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2007

14 प्रभा खेतान ; बाजार के बीच; बाजार के खिलाफ; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वितीय संस्करण

पत्र पत्रिकाएँ

तद्भव संपादक अखिलेश ,इंदिरा नगर लखनऊ

हंस संपादक राजेंद्र यादव, अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली

कथादेश संपादक हरिनारायण, वसुंधरा प्रकाशन नई दिल्ली

नया ज्ञानोदय संपादक, लीलाधर मंडलोई, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली

वार्गथ संपादक एकांत श्रीवास्तव, कुसुम खेमानी , भारतीय भाषा परिषद कोलकाता

नोट : यह शोध रुपरेखा अंतिम नहीं है, भविष्य में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन किया जा सकता हैं।